Lecture No. - (09)

Name of the College - A.P.S.M College, Barauni, Begusarai
L.N.M.U. Darbhanga.

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)

Deptt - A.I.H.E.&C

Lession / Plan for class - B.A Part - II (H) Paper IV

Date - 23-06-21

Name of the Topic - (खजुराहो) कंदरिया महादेव का मंदिर

कंदरिया महादेव :- कंदरिया महादेव का मंदिर एक ऊँचे प्रस्तर पर बना है, जहाँ सीढ़ी के सहारे पहुँच जाते हैं। देखने से उसकी मर्यादा झलकती है। मंदिर का प्रवेश द्वार अतीव भव्य रीति से खुदा है। सामने की प्रवेशमार्ग से चौकोर अर्धमंडप भाग में चले जाते हैं। तत्पश्चात्, वर्गाकार मंडप है। मंडप के बाजू का भाग गर्भगृह की चारों तरफ विस्तृत है। तथा उसी के वातायन (खिड़की) से जुड़ जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार की बनावट एक सतह में नहीं है। अर्धमंडप से ऊँचा मंडप स्थान है उससे अंतराल की स्थिति ऊँची है। वहाँ से कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर गर्भगृह में पहुँचते हैं। इस प्रकार सभी समतल में नहीं है। यह कहा जा सकता है कि मध्य भारत में स्थापत्यकला की जो शैली विकसित हुई। उसका सम्पन्न कंदरिया महादेव के मंदिर का मंदिर में पाते हैं, वह खजुराहो सुकुमणि है।

इसकी दीवारों पर अत्यंत सुंदर मूर्तियाँ उकेरी हैं। दसवीं सदी में योगिनी सम्प्रदाय का जोर था। इस पर वाममार्गी विचारों का प्रभाव पड़ा। उनके विचार में जीवन का क्रम शाश्वत रूप में चलता है। भौतिक जीवन का विनाश होता है। शिव शक्ति का मिलन जीवन का उद्देश्य है। P.T.O.

Scanned with CamScanner

अथ आध्यात्मिक मिलन का सांसारिक रूप मैथुन है। गुप्त तंत्र में दीक्षित होकर मैथुन आदि वामाचार की क्रिया करते हैं। इस प्रकार कंदरिया महादेव के मंदिरों पर उकेरे मिथुन या युगमप्रेमी की आकृतियाँ विद्यमान हैं। नायिकाएँ श्रृंगारिक मुद्राओं में उत्कीर्ण हैं। तरह-तरह के शारीरिक, प्रसाधन, प्रियतम को प्रसन्न करने की मुद्राएँ, आदि बाँसुरी की तान, पाँवों में नूपुर धारण करना, दर्पण में मुख देखना श्रृंगारिक शिल्प की पराकाष्ठा बतलाते हैं। उनसे प्रगाढ़ तन्मयता तथा आनन्द की चरम सीमा व्यक्ति हो रही है।

मध्य भारत के मंदिरों कुछ विवरण समाप्त करते समय जबलपुर के समीप मंदिर भेड़ाघाट पर स्थित चौंसठ योगिनी का उल्लेख आवश्यक है। चौंकोर मंदिरों के अतिरिक्त गोलाकार मंदिर का यह नमूना है। गोलाकार आँगन के चारों तरफ प्रार्थना निमित्त श्रेणियाँ सहित स्थान है। जिसमें योगिनियाँ स्थापित की गई है। उस स्थान पर अस्सी (80) प्रार्थना स्थल हैं। मध्य मंदिर में उमामहेश्वर की प्रतिमा स्थापित है। खजुराहो के चौंसठ योगिनी मंदिर की बनावट चार कोणा है। वह चतुष्कोण भाग 102×60 वर्ग फुट में फैला है। चौंसठ बाह्य पूजा स्थल दिख पड़ते हैं। सभी पर शिखानुमा मिनार है। नागर शिखर की ऊपरी भाग में दो आमलक है। इस प्रकार मध्य भारत में खजुराहो शैली की प्रधानता रही।

भारती कुमारी
A.I.H.&C
Date-
23-06-21
P.T.O.